हिंदी चिंतन और चिंता के आयाम

वे बेहद दु:खी थे। उनकी सारी चिंता हिंदी को लेकर थी। कहने लगे, क्या करें, हिंदी के प्रचार-प्रसार को लेकर कुछ हो ही नहीं पा रहा।

मेरी आँखों में छाए हिंदी के अँधेरे में खुशी के अनार छूटने लगे। तो आखिरकार भाग्य पलटे। घूरे के पलटते हैं बारह बरस पर, तो हिंदी के नहीं पलटेंगे! घूरे से ज्यादा गई-बीती तो नहीं ही ठहरी अपनी हिंदी।

सो दीदावर पैदा हो ही गया। बेनूरी पे रोती नर्गिस को उठाकर एकदम ब्यूटी कॉण्टेस्ट में खड़ा कर देनेवाला। मैं सोल्लास मदद के लिए लपकी। उन्होंने चश्मे की कमानी पर मुझे तौला, आश्वस्त हुए और बोले, 'हिंदी को अंग्रेजी में कोई भली प्रकार समझानेवाला मिले तो बताइए।'

मैंने कहा, 'हिंदी को हिंदी में समझा लें तो कैसा रहे?'

वे खीझे, 'हिंदी को हिंदी में समझाने से फायदा?'

मैंने कहा, 'किसका फायदा? हम हिंदी के ही फायदे की बात कर रहे हैं न!'

उन्होंने कुपित नजरों से मुझे देखा, 'आप लोग समझती तो हैं नहीं। मैं विदेशों की बात कर रहा हूँ। हमें विदेशों में हिंदी के महत्त्व पर प्रकाश डालना है, इसका प्रचार-प्रसार करना है। मैं हिंदी को अपने साथ विदेश यात्रा पर ले जाना चाहता हूँ।' (उन्होंने यह नहीं कहा कि वे हिंदी की पूँछ पकड़कर विदेश यात्रा की वैतरणी पार करना चाहते हैं।)

'सो तो कितने लोग गए। समझ भी आए अंग्रेजी में।'

•

'यही कि हिंदी एक दरिद्र भाषा है। इसमें सूरज के लिए तो सत्रह पर्यायवाची हैं, लेकिन चूहे के लिए सिर्फ एक।'

उन्होंने भावों को उतारा-चढ़ाया। फिर मुझे समझाने की कोशिश की, 'किसी अंग्रेजीवाले ने कहा है तो सोच-समझकर ही कहा होगा। शायद ऐसा कहने से ग्रांट वगैरह की उम्मीद बढ़ जाती है। बहरहाल, कुछ-न-कुछ वाजिब कारण जरूर होगा।'

'कारण अज्ञान भी तो हो सकता है, अथवा दूसरे शब्दों में अंग्रेजीवालों का हिंदी ज्ञान। या फिर यह कि ग्रांट दरिद्रों को ही तो मिलती है।'

उन्होंने अपनी सफाई पेश करते हुए कहा, 'देखिए, मुझपर आप कोई आरोप नहीं लगा सकतीं। मैंने हिंदी के सत्तर प्रतिशत लेखकों को पद यात्राओं के स्तर से उठाकर विदेश यात्राओं के स्तर पर ला खड़ा किया। क्या हिंदी के लिए यह फख्र की बात नहीं कि आज हिंदी का हर तीसरा लेखक फॉरेन रिटर्न है? लमही से चले हिंदी लेखकों को लॉस एंजेल्स पहुँचा रहा हूँ। कोई कम महत्त्व का काम है यह!'

'मैं हिंदी लेखकों की नहीं, हिंदी की बात कर रही हूँ।'

'मैं भी; मैंने कितनी कोशिश की आपकी हिंदी के लिए। उसे सांस्कृतिक शिष्टमंडलों के साथ, लेखकीय अस्मिता के साथ, राजनीतिक सौहार्द के साथ बराबर यहाँ-वहाँ भेजा, प्रचारित, प्रोत्साहित करने की कोशिश की; लेकिन न जाने क्या कारण है कि सारे नाच-गाने, कुरते-घाघरी, सिरेमिक्स और चिलम-हुक्के तो अपनी जगह पहुँच जाते हैं, नहीं पहुँच पाती तो बस हिंदी। यही जहाँ की तहाँ रह

'रह नहीं जाती, बल्कि यों कहा जाए कि कुछ आवश्यक, अपरिहार्य कारणों से वे लोग ऐन मौके पर छोड़ देने के लिए विवश हो जाते हैं। 'भूलवश' का बहाना मारकर, जानबूझकर उँगली छुड़ाकर, सांस्कृतिक गतिविधियों से ठुँसे सूटकेसों और एयर बैगों में हिंदी के लिए जरा भी जगह न होने की क्षमा याचना कर ली जाती है।'

'अब आप जो भी समझें।'

'मैं तो यही समझती हूँ कि हिंदी की बात की जाए, लेकिन हिंदी में नहीं।'

'यह आपका सरासर गलत आरोप है। हमारे पास इतनी ढेर सारी एक्सपोर्ट क्वालिटी हिंदी जमा है, लेकिन उसे कोई हिंदीवाला ही खरीदने के मूड में नहीं। आप कहिए तो 'सेल' लगवा दूँ। जो कुछ भी वसूल हो जाए। हिंदी को लेकर तो हम अतिरिक्त उदार हैं। हमेशा खुदरा से लेकर थोक व्यापारियों तक की तलाश और फिराक में रहते हैं। हमारी कोशिश रहती है कि हर संस्थान, हर कार्यालय के जीने के पीछे या किसी-न-किसी कोने-अँतरे हिंदी विभाग, हिंदी कक्ष आदि अवश्य हो।

'हिंदी को इतना काम तो मिल ही जाए कि वह अपनी गुजर-बसर कर ले, स्वावलंबी बने। लेकिन वह अपनी ही गुजर-बसर नहीं कर पाती तो हिंदीवालों की क्या करेगी। अब देखिए न, बेरोजगार तो उसे देखते ही ऐसे बिदकते हैं जैसे किसी महाअपशकुनी से सामना हो गया हो। ऐसी गई-गुजरी हालत में वह क्या खाकर हिंदुस्तान का पालन-पोषण करेगी। जरूरत इस बात की है कि इस दिशा में उसे प्रोत्साहित करने के लिए आप जैसे लोग आगे आएँ। हिंदी के उद्धार का बीड़ा उठाएँ, हिंदी का चना-चबैना खाएँ, हिंदी के हाथों का पानी पिएँ, हिंदी के रिक्शे पर बैठें, फुटपाथों पर हिंदी को ओढ़ें-बिछाएँ और मेरी रचनाओं तथा भाषणों का ए-वन अंग्रेजी अनुवाद

'क्षमा कीजिए,' मैं तैश में आकर उठ खड़ी हुई, 'हिंदी को आपकी दया-धरम के लंगरों और फुटपाथों की जरूरत नहीं। उसे उसका खोया हुआ स्वाभिमान चाहिए, सम्मान चाहिए, दरजा चाहिए; वाजिब दरजा और उसकी अस्मिता

'ऐसा कीजिए,' उन्होंने मुझे बीचोबीच टोकते हुए कहा, 'हिंदी की जरूरतों और शिकायतों की यह पूरी लिस्ट अंग्रेजी में अनुवाद करा के हमारी विभागीय फाइल में नत्थी करा दीजिए। हम बहुत शीघ्र एक्शन लेंगे। आपको इन्फॉर्म करेंगे।' □